बच्चन के काव्य में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के विचारों का प्रभाव

शीला बिष्ट

संसार में प्रत्येक व्यक्ति का अपना दर्शन होता उसका दर्शन उसके विचारों और जीवन जीने के ढंग में झलकता है। दर्शन उस शाश्वत सत्य का साक्षात्कार है जो देशकाल की सीमा से परे है। इस दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व का दर्शन एक ही होना चाहिए। किन्तु ऐसा सम्भव नहीं है क्योंकि दर्शन उसके प्रणेता दार्शनिक के विचार और समय की उपज है। लगभग सभी दर्शन एक ही सत्य की अभिव्यक्ति देते हैं। किन्तु विभिन्न दार्शनिको ने अपने दृष्टिकोण से उन्हें अलग अलग रूपों में स्थापित किया है।

दर्शन और साहित्य का अत्यधिक घनिष्ट सम्बन्ध है । साहित्य, दर्शन द्वारा विश्लेषित जीवन की समस्याओं को उद्घाटित करना हैं एक कवि स्वयं में दार्शनिक होता है। वह इस गोचर जगत् के साथ अदृश्य/अगोचर तत्त्व का भी आभास कर लेता है। कवि दर्शन की नीरसता में कल्पना की उड़ान भरके सरसता ले आता है। कवि बच्चन के काव्य में भारतीय व पाश्चात्य दर्शन की धाराओं का मिला जुला रूप दिखता है। उनके दर्शन रूपी भावों का विश्लेषण निम्न शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत है–

(1) कर्मवाद :–

कर्मवाद भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण शाखा है। यहाँ कर्म के प्रति विशेष निष्ठा का भाव निहित है। कर्म के प्रति निष्ठा का भाव हमें गीता से प्राप्त होता है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म उपदेश प्रदान करते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि अपना कर्म अवश्य करो पर उस कर्म के स्वरूप के गहनतम रूप को भी जानो। वह ठीक से जानो कि कर्म क्या है; विकर्म क्या है, और अकर्म क्या है?

''कर्मणो ह्यपि बोधव्यं बोधव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोधव्यं गहना कर्मणों गतिः।।''[1]

तात्पर्य यह कि यदि व्यक्ति इस संसार रूपी भव सागर को पार करना चाहे तो उसे कर्म–अकर्म और विकर्म में अन्तर समझना होगा।

गीता के इस कर्मवाद का समर्थन करते हुए कवि बच्चन ने अपने काव्य में कर्म का सन्देश प्रदान किया है। कर्म से दूर भागने या मुंह मोड़ने वाले को कवि कहते हैं–

"भाग्य लेटे रहा का सदा लेटा रहा है
जो खड़ा है भाग्य उसका उठ खड़ा है
चल पड़ा जो भाग्य उसका चल पड़ा है।"[2]

कवि कहते हैं इस संसार में कायर किसी को भी नहीं सुहाते हैं–

"मैं अपरिचित हूँ नहीं उन कायरों से जो कि उससे भागते हैं।
वीर अपने खत का कर अर्घ्य अर्पित दान अपना माँगते हैं।
रूप की देवी निखरती है उसी से स्नान करके, कापुरुष का
भीरू, दुर्बल अश्रु दुनिया में किसी को भी नहीं स्वीकार होता।
धार पैनी देख उस पर फेरने का हाथ मैं बेजार होता।।"[3]

उनकी कविता में कर्म का सन्देश सभी रचनाओं में विद्यमान है। कवि ने 'गीता' से प्रभावित होकर उसका 'जनगीता' नाम से काव्यम भावानुवाद किया बाद में इसी का 'नागर गीता' नाम से भावानुवाद किया इस भावानुवाद का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

"अगर कर्म करना मैं छोड़ूँ
तो सब लोग भ्रष्ट हो जाएँ।
बनूँ वर्णसंकर–कर्त्ता मैं
और समग्र प्रजा का हंता।।"[4]
"उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।।" (3/24)

(2) बौद्ध दर्शन :–

भारतीय अनीश्वरवादी दर्शन में सर्वाधिक प्रभाव बौद्ध दर्शन का रहा है। इन्होंने ईश्वर का खण्डन किया है किन्तु व्यावहारिक रूप में ईश्वर पर विचार किया गया है। महायानियों ने बुद्ध को ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया। बुद्ध ने सम्पूर्ण संसार को दुःखमय बताया है। बौद्ध दर्शन में दुःखों के निवारण पर गहन विचार मिलता है। इस विचारधारा को 'दुःखवाद' भी कहा गया है। **"बुद्ध का दर्शन अपने मौलिक रूप प्रतीत्य समुत्पाद (क्षणिकवाद) में भारी क्रांतिकारी था। जगत् समाज मनुष्य को उसने क्षण–क्षण परिवर्तनशील घोषित किया और कभी न लौटने वाले 'तेहि नो दिवसा गतः' (वे हमारे दिवस चले गये) की परवाह छोड़कर परिवर्तन के लिए हर वक्त तैयार रहने की शिक्षा देता था।"[5]** कवि बच्चन का काव्य बौद्धों के दुःखवाद से प्रभावित है निशा निमन्त्रण , आकुल–अन्तर व एकान्त–संगीत की कविताओं में उनका दुःखवाद अपने चरम पर

पहुंच गया है, कवि को दुःख सहते हुए दुःखों में रहने की आदत हो गई अब उनको दुःख ही प्रिय लगने लगे हैं। कवि किन्तु यह दुःख भी साथ नहीं देता–

''साथी, साथ न देगा दुख भी।
काल छीनने दुख आता है
जब दुःख भी प्रिय हो जाता है
नहीं चाहते जब हम दुख के बदले में लेना चिर सुख भी
साथी, साथ न देगा दुख भी।''[6]

दुःख जीवन का अनिवार्य अंग है कवि दुःख के संकट को चुपचाप सहन करने की बाते कहते हैं–

''दुनिया न कहीं उपहास करे, सब कुछ करता है मौन सहन।''[7]

कवि सुख पाने के साथ दुःख सहने की क्षमता रखते हैं। वे जीवन को सुख–दुःख का समन्वय मानते हैं–

''सुख की घड़ियों के स्वागत में। छन्दों पर छन्द सजाता हूँ।
पर अपने दुःख दर्द भरे, गोतों पर कब पछताता हूँ।''[8]

कवि के मन में सुख–दुःख का द्वन्द्व चलता है इस द्वन्द्व में भी कवि की आशावादी भावना प्रकट होती नजर आती है–

''है ज्ञात हमें नश्वर जीवन
नश्वर इस जगती का क्षण–क्षण,
है, किन्तु अमरता की आशा
करती रहती उर में क्रंदन,
नश्वरता और अमरता का
अब द्वन्द्व मिटाने हम आए।
मधु प्यास बुझाने आए हम।
मधु प्यास बुझाने हम आए।।''[9]

बच्चन की 'बुद्ध और नाचघर' कविता महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का समर्थन करती दीख पड़ती है–

''अन्त में, सबका है यह सार
जीवन दुःख ही दुःख का है विस्तार,
दुख का इच्छा है आधार

अगर इच्छा को लो जीत,

पा सकते हो दुखों से निस्तार

पा सकते हो निर्वाण पुनीत।''[10]

दुःखवाद व बौद्ध दर्शन से प्रभावित कविता के कतिपय उदाहरण बच्चन जी के साहित्य में विद्यमान है। जिनका कार्य विस्तार के कारण वर्णन करना सम्भव नहीं है।

(3) गाँधीवादी दर्शन :–

कवि हरिवंश राय बच्चन के काव्य में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के विचारों का भी प्रभाव स्पष्ट झलकता है। गाँधी जी सत्य, अंहिसा के पुजारी थे। वे सम्पूर्ण मानवता के लिए एक आदर्श है अतः भारतीय आधुनिक विचारधारा में गाँधी–दर्शन का अलग से विश्लेषण होता है। गाँधी जी के विचारों के समर्थक गाँधीवादी कहलाते हैं। कवि बच्चन की 'खादी के फूल' व 'सूत की माला' कविता संग्रह उनके देशप्रेम व गाँधी जी के प्रति अनन्य श्रद्धा को प्रकट करते हैं। वे गाँधी जी की मृत्यु पर कह उठते हैं–

''भारतमाता का सबसे प्यारा बड़ा पूत

हो गया एक के पागलपन से पराभूत।

हो गया एक के क्रुद्ध तमंचे का शिकार

यह तो निरभ्र नभ–मण्डल से है वज्रपात।''[11]

कवि ने गाँधी जी को अवतरित पुरुष माना उनका मानना है पृथ्वी पर मानवता को बचाने दानवों (बुराईयों) से लड़ने बापू स्वर्ग से आये थे–

''जब गाँधी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को

मानव की पशुता से दानवता से लड़ने

तब देवों ने था उनको यह आदेश किया

लो देह भीम की बल–विक्रम बजरंगी का।''[12]

बच्चन जी का अन्य रचनाओं में भी गाँधी जी के मानवतावादी, अहिंसात्मक विचारों की पुष्टि होती है।

(4) भाग्य/नियतिवाद :–

संसार के सभी देशों के सभी धर्मों में नियति/भाग्यवाद सम्बन्धी विचार मिलते हैं। आदि कवि वाल्मीकि ने भी कहा है–

''नियतिः कारण लोके नियतिः कर्मसाधनम्।

नियति सर्वभूतानां नियोगेब्विह कारणम्।।''[13]

भारतीय चिन्तन परम्परा में वैदिक दर्शन में नियतिवाद पर कोई मंथन नही मिलता है। उत्तरवैदिक काल से इस भाग्यवादी विश्लेषण की शुरूआत मानी जा सकती है किन्तु प्रत्यक्ष नियतिवाद की शुरूआत पाश्चात्य दर्शन की निराशावादी दृष्टि में हुई है। बच्चन साहित्य में नियतिवादी भावों का अत्यधिक चित्रण हआ है। उदाहरण–

''मिले न पर ललचा ललचा क्यों
आकुल करती है हाला
मिले न पर तरसा तरसाकर
क्यों तड़पाता है प्याला
हाय नियति की विषम लेखनी
मस्तक पर यह खोद गई
दूर रहेगी मधु की धारा
पास रहेगी मधुशाला।''[14]

''प्याला है पर पी पाएंगे,
है ज्ञात नहीं इतना हमको
इस पार नियति ने भेजा है
असमर्थ बना कितना हमको।''[15]

इस संसार का सबसे बड़ा सच मृत्यु है जो एक दिन सबको आनी है। कवि मृत्यु को अभिशाप बताते हुए कह उठते हैं–

''यह अभिशाप
मानव के लिए कितना बड़ा है
मृत्यु!
मानव, सृष्टि के सम्राट की
कितनी बड़ी असमर्थता है।''[16]

कवि के काव्य में नियतिवादी भावों के असंख्य उदाहरण सहज ही मिल जाते हैं।

(5) अस्तित्ववाद :–

अस्तित्ववादी विचारधारा पाश्चात्य–साहित्य की उपज है। यह विचारधारा 20वीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप में सबसे अधिक प्रचलित थी। यह आत्मविश्वास में मानवीय तर्कों की प्रतिक्रिया थी। इसके मानने वाले प्रमुख विचारक सॉरेन कीर्कगार्ड व विलियम सार्त्र हैं। अस्तित्ववादी व्यक्ति के महत्व को स्वीकारता है। यह ईश्वर की सत्ता को नहीं स्वीकारता। **''इसमें ईश्वर और विश्व के**

समस्त अपरोक्ष ज्ञान का विरोध किया गया है। सांसारिक ज्ञान मात्र सम्भावना है। ईश्वर कोई आदर्श प्रत्यय मात्र नहीं है, बल्कि चरम सद्वस्तु है यह हमारे अपने व्यक्तित्व का सार है।''[17] यह दर्शन व्यक्तिवादी है। आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों पर अस्तित्ववाद का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि गीतकार बच्चन जी के साहित्य में भी अस्तित्ववादी भावों की कविता मिलती है। 'कवि की वासना' कविता में कवि के अस्तित्ववादी भाव प्रकट हुए हैं–

''प्राण प्राणों से सकें मिल
किस तरह दीवार है तन,
अल्पतम इच्छा यहाँ मेरी बनी बंदी पड़ी है
विश्व क्रीडास्थल नही रे, विश्व कारागार मेरा।''[18]

बच्चन का अस्तित्ववाद पाश्चात्य विचारधारा का शुष्कवाद न होकर भावुकता को लिए हुए सुख–दुःख के क्षणों का वाणी विधान है।

''लघु मानव का कितना जीवन,
फिर क्यों उस पर इतना बंधन
यदि मदिरा का ही अभिलाषी
पी सकता कुछ गिनती के कण।
चुल्लु भर में गल सकता है
उसके तन का जामा खाकी
मैं एक सुराही मदिरा की।''[19]

'एकान्त–संगीत' का कवि व्यथित होकर कह उठता है–

''कहने की सीमा होती है,
सहने की सीमा होती है
कुछ मेरे भी वश में, मेरा कुछ सोच–समझ अपमान करो !
अब मत मेरा निर्माण करो।''[20]

इस प्रकार कवि बच्चन ने आनुभूतिक सत्यों के उद्घाटन के साथ–साथ अपने काव्य में दार्शनिक चेतना के स्वर भी बिखेरे हैं। वे दर्शन की विविध शाखाओं का समर्थन करते नजर आते हैं। उनकी आस्था भारतीय दर्शन की अपेक्षा पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं का अधिक समर्थन करती दीखती है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कवि का जीवन ही अपने आप में एक अद्भुत जीवन–दर्शन है।

सन्दर्भ सूची

1— श्रीमद्भगवद्गीता : 4.17, गीताप्रेस गोरखपुर

2— बच्चन रत्नावली—02 (चार खेमे चौंसठ खूंटे), पृ0सं0—531, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

3— बच्चन रचनावली—02 (आरती और अंगारे), पृ0सं0—231

4— भगवद्गीता : बच्चन, पृ0सं0—66, राजपाल एण्ड सन्ज, 2016

5— बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, पृ0सं0—51, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण—2016

6— निशा—निमन्त्रण : बच्चन, पृ0सं0—123, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, संस्करण—2015

7— बच्चन रचनावली—01 (आकुल अन्तर), पृ0सं0—288, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण—2006

8— मिलन—यामिनी : बच्चन, पृ0सं0—67, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण—2009

9— मधुबाला : बच्चन पृ0सं0—37, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण—2013

10— बच्चन रचनावली—02 (बुद्ध और नाचघर), पृ0सं0—350

11— बच्चन रचनावली—01 (खादी के फूल), पृ0सं0—460

12— तदैव, पृ0सं0—485

13— वाल्मीकि रामायण, 25—4, गीताप्रेस गोरखपुर

14— मधुशाला : बच्चन, 19वीं रूबाई, राजकमल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण—2014

15— मधुबाला : बच्चन, पृ0सं0—79

16— दो चट्टानें : बच्चन, पृ0सं0—140, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण—2009

17— आधुनिक हिन्दी काव्य और संस्कृति : डॉ0 भक्तराज शास्त्री, पृ0सं0—234, चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण—1996

18— मधुकलश : बच्चन, पृ0सं0—36, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण—2012

19— मधुबाला : बच्चन, पृ0सं0—47

20— बच्चन रचनावली—01 (एकांत—संगीत), पृ0सं0—215